हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या :- 10
कामायनी : बिंब योजना

---

(1) बिंब आधुनिक समीक्षा का प्रतिमान है जिसकी फ्लिण्ट जैसे पश्चिमी साहित्य चिंतकों ने की है। हिन्दी में इसे कहीं-कहीं 'चित्र भाषा' भी कहा जाता है। बिंब का अर्थ है :- 'मन में छवियों का निर्मित होना।' जब लेखक किसी वर्ण्य-विषय का वर्णन सूक्ष्मता के साथ करता है तो पाठक के मन के भीतर छवियाँ निर्मित होने लगती है। ये छवियाँ सिर्फ दृश्य तक सीमित हो, ऐसा नहीं है। हमारी सभी ज्ञानेन्द्रियों के स्तर पर ये छवियाँ सक्रिय हो सकती है। कहीं रूप के स्तर पर तो कहीं रस, गंध, स्वाद या स्पर्श के स्तर पर।

(2.) हिन्दी साहित्य में यूँ तो बिंबों का प्रयोग लगभग हर कवि ने किया है, किन्तु जो कवि अपनी बिंब क्षमता के लिए जाने जाते है उनमें प्रसाद का नाम भी अग्रगण्य है। 'कामायनी' में बिंब योजना

इतने सघन रूप में मौजूद है कि कई स्तरों पर बिंब निर्माण होता है।

(3) प्रसाद की बिंब क्षमता का निदर्शन 'कामायनी' के ~~प्रथ~~ प्रथम सर्ग 'चिंता' से ही होने लगता है। उन्होंने प्रलय की घटना और चिंता में डूबे मनु का वर्णन इस सहजता और तन्मयता के साथ किया है कि पाठक के सामने चित्र उपस्थित होते रहते हैं। निम्न पंक्तियाँ 'विराट बिंब' का निर्माण करती हैं जो कि इस महाकाव्य में प्रथम पंक्तियाँ हैं – " हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष, भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह ।।"

(4.) बिंब दो प्रकार के होते हैं – एकल और संश्लिष्ट। एकल बिंब किसी एक ज्ञानेन्द्रिय के स्तर पर सक्रिय होते हैं। जबकि दो या दो से अधिक ज्ञानेन्द्रियों के स्तर पर आस्वादन कराने वाले बिंब संश्लिष्ट कहलाते हैं।

'कामायनी' में स्थूल ही नहीं, संश्लिष्ट बिंब भी पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं:-

"दिग्दाहों से धूम उठे, या जलधर उठे क्षितिज-तट के,
सघन गगन में भीम प्रकंपन, झंझा के चलते झटके।।

(5.) कुछ आचार्यों ने बिंब क्षमता के ~~परिक्षण~~ (परीक्षण) के लिए बिंब के दो प्रकारों की चर्चा की है - लक्षित बिंब तथा उपलक्षित बिंब। लक्षित बिंब अपनी प्रकृति में सरल होता है जो सामान्य जीवन में अनुभव होता है, उसी की रचना में बिंब के तौर पर उपस्थित करना लक्षित बिंब कहलाता है 'कामायनी' में कहीं-कहीं प्रसाद ने लक्षित बिंब का प्रयोग किया है

"उसी तपस्वी-से लंबे थे देवदारु दो चार खड़े"

इसके विपरित, उपलक्षित बिंब अपनी प्रकृति में कुछ जटिल होते हैं यदि किसी अमूर्त भाव या विचार को कवि बिंब के ~~के~~ रूप में प्रस्तुत करना चाहे तो उसे ~~उ~~ उपलक्षित बिंब की सृष्टि करनी पड़ती है इसके लिए जरूरी हो जाता है कि कवि

किसी प्रतीक या उपमान का प्रयोग करे, लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग करे। प्रसाद में यह क्षमता अत्यधिक है-

"कामायनी कुसुम वसुधा पर पड़ी न वह मकरन्द रहा,
एक चित्र बस रेखाओं का, है उसमें अब रंग कहाँ।"

प्रस्तुतकर्त्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो०नं०— 8292271041
ईमेल :- benamkumar13@gmail.com

दिनांक
30/09/2020